vis-a-vis annual loss of foodgrains in the country on account of land degradation and crop damage due to pollution. However, the land degradation will definitely affect the soil fertility and thus its productivity.

(d) To deal with the land degradation hazards created by water & wind erosion and other location-specific causitive factors, the Government is implementing a number of Centrally Sponsored Schemes, viz, (i) Soil Conservation in the Catchments of River Valley projects (RVP) (ii) Soil Conservation in the Catchments of Flood Prone Rivers (FPR), (iii) Reclamation of Alkali Soils (iv) Scheme of Watershed Management for Shifting Cultivation areas in North Eastern India and (v) National Watershed development Project in Rainfed Areas. The Indian Council of Agricultural Research (ICAR) have established the Central Soil & Water Conservation Research & Training Institute at Dehradun with Regional Stations at various places in the country. Suitable technology has been developed to minimise the extent of land degradation.

Visit of International Team to Nuclear Power Station in Gujarat

920. SHRI PREM CHAND GUPTA: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that an International Team of the World Association of Nuclear Operators (WANO) visited the Kakrapar Nuclear Power Station in Gujarat to check the safety standards of the installation; and

(b) what are the implications of this inspection in view of our stand on NPT, CTBT and recent nuclear explosions?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRIMATI VASUNDHARA RAJE): (a) and (b) Yes, Sir. At the request of the Nuclear Power Corporation of India Ltd. (NPCIL), the World Association of Nuclear Operators (WANO) carried out a Peer Review of the Kakrapar Atomic Power Station (KAPS) in January-February, 1998. The Peer Review by WANO is a voluntary confidence building measure. Such Peer Reviews enable exchange of information between operators of Nuclear Power Stations through sharing of experiences. Indian experts have participated in technical exchange visits and in Peer Reviews in many countries such as the USA, Japan and South Korea. The reviews have nothing to do with treaties such as NPT, CTBT or the recent nuclear tests.

नाभिकीय संयंत्रों का उत्पादन तथा क्षमता

921. **श्री दिलीप सिंह जूदेव:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) मंत्रालय द्वारा परमाणु ऊर्जा के उत्पादन के लिए वर्तमान में कितने तथा किन-किन स्थानों पर रिएक्टरों की स्थापना की गई है, उनकी स्थापित क्षमताओं सहित वास्तविक उत्पादन क्षमताएं कितनी हैं;

(ख) उन स्थानों के नाम क्या-क्या है जहां नए परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना की स्वीकृति दी जा चुकी है और उन स्थानों के नाम क्या है जहां यह संयंत्र निर्माणाधीन है;

(ग) उनकी प्रस्तावित उत्पादन क्षमता कितनी है; और

(घ) मध्य प्रदेश के उन स्थानों का ब्यौरा क्या है जहां परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना का प्रस्ताव विचाराधीन है?

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती वसुन्धरा राजे): (क) इस समय पांच जगहों पर दस परमाणु विद्युत रिएक्टर काम कर रहे हैं। उनकी अवस्थिति, डिजायन क्षमताएं और पिछले तीन वर्षों के दौरान हासिल किए गए वास्तविक क्षमता गुणक के बारे में संलग्न विवरण-I में दिया गया है (नीचे देखिए)

(ख) और (ग) संलग्न विवरण-II उन स्थानों को दर्शाता है जहां नए विद्युत संयंत्र निर्माणाधीन हैं अथवा जिनका नौवीं योजनावधि के दौरान निर्माण किया जाना प्रस्तावित है; प्रत्येक के सामने उनकी प्रस्तावित उत्पादन क्षमता दी गई है;

(घ) इस समय मध्य प्रदेश में परमाणु विद्युत संयंत्र स्थापित करने का कोई प्रस्ताव नहीं है;

विवरण-I

अवस्थिति	यूनिट	डिजायन क्षमता (मेगावाट)	उपयोगिता 1995-96	(क्षमता गुणक %) 1996-97	1997-98
तारापुर, महाराष्ट्र	टीएपीएस-1	160	79	30*	84
तारापुर, महाराष्ट्र	टीएपीएस-2	160	32*	46*#	68
रावतभाटा राजस्थान	आरएपीएस-1	100	$	$	40$
रावतभाटा राजस्थान	आरएपीएस-2	200	$	$	$
कलपाक्कम, तमिलनाडु	एमएपीएस-1	170	76	51	49
कलपाक्कम, तमिलनाडु	एमएपीएस-2	170	18	83	78
नरोरा, उत्तर प्रदेश	एनएपीएस-1	220	67	71	90
नरोरा, उत्तर प्रदेश	एनएपीएस-2	220	75	75	89
काकरापार, गुजरात	केएपीएस-1	220	58	83	48
काकरापार, गुजरात	केएपीएस-2	220	70	83	63
	योग:	1840			

* क्षमता का कम उपयोग किए जाने का कारण नियामक और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस अवधि के दौरान सेवाकालीन निरीक्षण किया जाना है।

\# पुनः संचारण पम्पों में से एक की अनउपलब्धता ने इस अवधि के दौरान क्षमता के उपयोग को कम करने में योग दिया।

$ राजस्थान परमाणु बिजलीघर-1 और राजस्थान परमाणु बिजलीघर-2 को वर्ष 1994 के दौरान क्रमशः अति दाब-सह मोचन प्रणाली में रिसाव होने और शीतलक चैनल को बदलने के कार्य की वजह से बंद रखा गया। राजस्थान परमाणु बिजलीघर-1 को 31 मार्च, 1997 को फिर से चालू कर दिया गया था और परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड द्वारा यथा अनुमत अप्रैल 97 से जून, 97 तक 100 मेगावाट और जुलाई, 97 से मार्च, 98 तक 150 मेगावाट के प्रचालन विद्युत स्तर के आधार पर 1997-98 के दौरान इसका डिजाइन किया गया क्षमता गुणक 40% था। राजस्थान परमाणु बिजलीघर-2 का बड़ा अनुरक्षण कार्य अंतिम चरण में है।

विवरण-II

संयंत्र का नाम	स्थिति	प्रस्तावित उत्पादन क्षमता	अवस्थिति
कैगा 1 और 2	निर्माणाधीन	प्रत्येक की 220 मेगावाट	कर्नाटक में कैगा
कैगा 3 और 4	प्रस्तावित	प्रत्येक की 220 मेगावाट	कर्नाटक में कैगा
आरएपीएस 3 और 4	निर्माणाधीन	प्रत्येक की 200 मेगावाट	राजस्थान में रावतभाटा
टीएपीपी 3 और 4	निर्माणाधीन	प्रत्येक की 500 मेगावाट	महाराष्ट्र में तारापुर
कुडानकुलम 1 और 2	प्रस्तावित	प्रत्येक की 1000 मेगावाट	तमिलनाडु में कुडानकुलम
पीएफबीआर	प्रस्तावित	500 मेगावाट	तमिलनाडु में कलपाक्कम
		योग: 5280	